Sample Kundli of Aarav

This is how your report looks. All names, dates and readings here are dummy details.

Moon sign Pisces | Lagna Leo | Birth star Revati

Birth Details

NAME	Aarav Sharma	DATE OF BIRTH	15 Aug 1995
TIME OF BIRTH	06:42 AM	PLACE OF BIRTH	Jaipur, Rajasthan, India
LATITUDE	26.9124° N	LONGITUDE	75.7873° E
TIMEZONE	GMT +05:30		

Panchang at birth

TITHI	Krishna Panchami	KARANA	Taitila
YOGA	Shula	NAKSHATRA	Revati
NAKSHATRA LORD	Mercury	ASCENDANT	Leo
ASCENDANT LORD	Sun	SUNRISE	05:57
SUNSET	19:04		

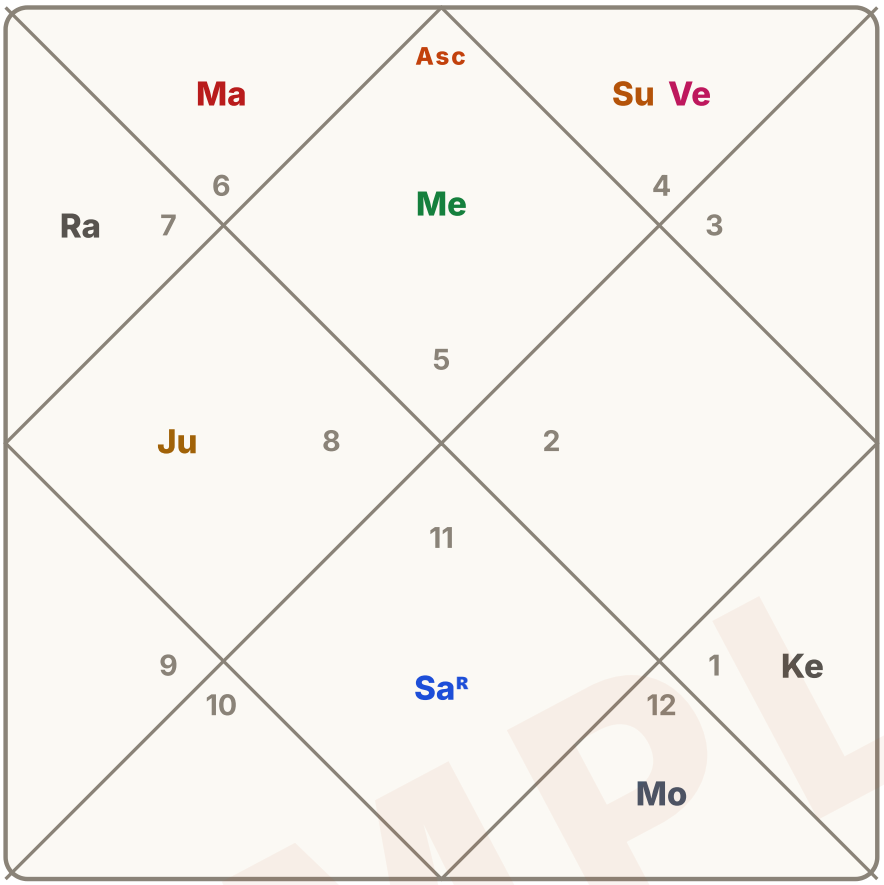
Avakhada Details

VARNA	Brahmin	VASHYA	Jalachara
YONI	Gaja	GANA	Dev
NADI	Antya	MOON SIGN	Pisces
SIGN LORD	Jupiter	CHARAN (PADA)	2
PAYA	Iron	TATVA	Water
NAME SYLLABLE	Do		

Worked out from your date, time and place of birth on the sidereal zodiac (Lahiri). Varna, Vashya and Tatva follow the Moon sign; Yoni, Gana, Nadi and the name syllable follow the Moon's star and pada; Paya follows the Moon's house from the Lagna.

SAMPLE

KUNDALI MAKER



LAGNA (RISING)

♌ Leo 6°43′

MOON SIGN (RASHI)

♓ Pisces

BIRTH STAR

Revati, pada 2

BORN ON

Tuesday (Mangalavara), Krishna Panchami

RUNNING DASHA (VIMSHOTTARI)

Venus–Saturn

antardasha until Sept 2027 · Venus period to Sept 2031

SAMPLE

Planets at birth (sidereal, Lahiri)

GRAHA	SIGN & DEGREE	STAR (PADA)	HOUSE
Sun Surya	♋ Cancer 27°58′	Ashlesha (4)	12
Moon Chandra	♓ Pisces 22°53′	Revati (2)	8
Mars Mangala	♍ Virgo 21°13′	Hasta (4)	2
Mercury Budha	♌ Leo 15°00′	Purva Phalguni (1)	1
Jupiter Guru	♏ Scorpio 11°56′	Anuradha (3)	4
Venus Shukra	♋ Cancer 26°20′	Ashlesha (3)	12
Saturn Shani retrograde	♒ Aquarius 29°35′	Purva Bhadrapada (3)	7
Rahu Rahu	♎ Libra 6°00′	Chitra (4)	3
Ketu Ketu	♈ Aries 6°00′	Ashwini (2)	9

Vimshottari dasha periods (120-year cycle)

PERIOD	FROM	TO	YEARS
Mercury	Birth	Sept 2004	9.1 left
Ketu	Sept 2004	Sept 2011	7
Venus running	Sept 2011	Sept 2031	20
Sun	Sept 2031	Sept 2037	6
Moon	Sept 2037	Sept 2047	10
Mars	Sept 2047	Sept 2054	7
Rahu	Sept 2054	Sept 2072	18
Jupiter	Sept 2072	Sept 2088	16
Saturn	Sept 2088	Sept 2107	19

Dasha lords follow the birth star's lord in the order of *Brihat Parashara Hora Shastra* (ch. 46): Sun 6, Moon 10, Mars 7, Rahu 18, Jupiter 16, Saturn 19, Mercury 17, Ketu 7 and Venus 20 years, with the first period reduced by the part of the birth star already elapsed.

SAMPLE

Your chart, read from the texts

♌ Leo rising

Broad-faced and powerful; proud, quick to anger over small things; loves forests and hills; devoted to the mother and firm of mind.

Phaladeepika 9.5

♓ Moon in Pisces

Expert in the fine arts and able to win over even opponents; learned, musical, devout and polite; serves the powerful; happy, wealthy and generous.

Saravali ch. 23

- **Aspect of Mars:** Slights, little happiness, drawn to wrongdoing, but brave. Saravali ch. 23
- **Aspect of Jupiter:** Handsome and forceful, head of a district, very well-off, surrounded by many women. Saravali ch. 23

Running dasha: Venus–Saturn

Pleasures and comforts, fine vehicles, ornaments and treasure; intellectual pursuits and travel; auspicious deeds and gifts from the powerful.

Phaladeepika 19.12

As lord of your 3rd house, poorly placed: trouble for siblings, bad advice, hidden enemies and humiliation. Phaladeepika 20.16

As lord of your 10th house, poorly placed: misconduct, time abroad and inauspicious events. Phaladeepika 20.19

Saturn sits 8th from Venus: the sub-period lord is 6th, 8th or 12th from the dasha lord, which the texts call an unhappy combination.

Phaladeepika 20.29; Sarvartha Chintamani (dasha chapter)

Yogas in your chart

- **Anapha Yoga.** A graha in the 12th from the Moon: eloquent, generous, virtuous and famous; calm, good-looking and able to enjoy life's comforts. Saravali 13.1, 13.5
- **Vesi Yoga.** A graha (other than the Moon and the nodes) in the 2nd from the Sun: truthful, steady and hard-working. Saravali 14.1-2
- **Varishta Yoga.** The Moon in the 3rd, 6th, 9th or 12th from the Sun: the best share of wealth, wisdom, skill and learning (Varishta). Saravali 13.30; Phaladeepika 6.14

SAMPLE

- **Yogakaraka (Mars).** Mars owns your 4th (a Kendra) and 9th (a Trikona) house: a Yogakaraka, powerful in promoting prosperity. Its dasha and sub-periods help. Phaladeepika 20.54, 20.46
- **Sun + Venus together.** Skilled with weapons and strong; entertains the public; gains through women; weaker eyesight in old age. Saravali ch. 15

Your planets in the twelve houses

- **Sun in the 12th.** Strained ties with the father; weak eyesight; little wealth. Phaladeepika 8.4
- **Moon in the 8th.** Illness; health needs care. Phaladeepika 8.7
- **Mars in the 2nd.** Plain-spoken and rough in looks; weak in learning and wealth; falls in with the wrong people. Phaladeepika 8.8
- **Mercury in the 1st.** Long-lived, sweet and clever in speech, sharp-witted and learned. Phaladeepika 8.11
- **Jupiter in the 4th.** Happy among mother, friends, helpers, children and spouse. Phaladeepika 8.14
- **Venus in the 12th.** Pleasure, wealth and splendour. Phaladeepika 8.19
- **Saturn in the 7th.** A difficult marriage, want and wandering. Phaladeepika 8.22
- **Rahu in the 3rd.** Proud, strong-willed, long-lived and wealthy, though at odds with siblings. Phaladeepika 8.25
- **Ketu in the 9th.** Unrighteous ways, trouble for the father, bad luck and want. Phaladeepika 8.32

Paraphrased from the English translations in plain language. Old phrasing that is harsh or outdated has been softened; nothing has been added. Classical readings describe tendencies and are weighed together, never one line on its own.

SAMPLE

🕮 Bhrigu Samhita: your Leo rising, planet by planet

The book's own words in Hindi (Pt. Din Dayal Diwakar and Chinta Mani Joshi edition), for each planet in the house where it stands in your chart.

- **Sun in the 12th house.** बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल बना रहता है। खर्च पर वह अपना प्रभाव रखता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। ऐसा व्यक्ति भ्रमणशील भी होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव रखता है और अनेक प्रकार की कठिनाइयों के बाद उन पर विजय भी पाता है। Bhrigu Samhita, p. 331
- **Moon in the 8th house.** आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्व के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्व के सम्बन्ध में चिन्ता एवं हानि के योग प्राप्त होते हैं तथा पेट में भी कुछ विकार बना रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे लाभ होता है। यहाँ से चन्द्रमा सावती मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन के स्थान में भी कुछ हानि होती है तथा परिवार का सुख भी कम मिल पाता है।

  Bhrigu Samhita, p. 337
- **Mars in the 2nd house.** दूसरे धन व कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी रहेगी। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में सफलता मिलेगी। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि होती है तथा आठवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, धर्मात्मा तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

  Bhrigu Samhita, p. 342
- **Mercury in the 1st house.** पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक विवेकी, सम्मानित, भोगी तथा धनी होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से भी अत्यन्त उन्नति, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक यशस्वी तथा प्रतिष्ठित भी होता है। Bhrigu Samhita, p. 349
- **Jupiter in the 4th house.** चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान के सुख में कमी प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान एवं विद्या के पक्ष से लाभ होता है। यहाँ से गुरु के पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य के क्षेत्र से भी पूर्ण लाभ नहीं होता एवं नौवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं सुख की प्राप्ति होती है। Bhrigu Samhita, p. 359
- **Venus in the 12th house.** बारहवें स्थान व्यय तथा बाहरी सम्बन्धों के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता मिलती है। उसे पिता तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ हानि उठानी पड़ती है तथा शारीरिक पुरुषार्थ में भी कमजोरी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि

में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक अपने चातुर्य द्वारा शत्रु पक्ष में प्रभावशाली बना रहता है तथा अपनी हिम्मत के द्वारा झगड़े-झंझटों में विजय प्राप्त करता है। Bhrigu Samhita, p. 373

- **Saturn in the 7th house.** सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। शत्रु पक्ष में प्रभाव रहता है। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य तथा धर्म की कुछ हानि होती है। यश में कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य एवं शान्ति का ह्रास होता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि, भवन आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है।

  Bhrigu Samhita, p. 378

- **Rahu in the 3rd house.** तीसरे स्थान सहोदर एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-चातुर्य, धैर्य, साहस एवं परिश्रम का पुतला होता है। वह बड़ी गम्भीरतापूर्वक अपने स्वार्थ को सिद्ध करता है। भीतर से कभी कमजोरी अनुभव करने पर भी प्रकट रूप से साहस का प्रदर्शन करता है तथा दृढ़-निश्चयी होता है। Bhrigu Samhita, p. 383

- **Ketu in the 9th house.** नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती रहती हैं और उसे घोर परिश्रम करना पड़ता है। इसी प्रकार धर्म के पक्ष में भी कमजोरी बनी रहती है। भाग्यहीनता एवं धर्महीनता के कारण उसके यश को भी धब्बा लगता है। उसे कभी-कभी बड़े संकटों का शिकार भी होना पड़ता है। परन्तु अन्त में वह अपने गुप्त धैर्य, परिश्रम एवं साहस के बल पर सफलता एवं शक्ति प्राप्त करता है। Bhrigu Samhita, p. 394

SAMPLE

Your Kundali in detail

Navamsa: the ninth-part chart

GRAHA	BIRTH SIGN	NAVAMSA SIGN
Lagna	♌ Leo	♊ Gemini
Sun	♋ Cancer	♓ Pisces
Moon	♓ Pisces	♑ Capricorn
Mars	♍ Virgo	♋ Cancer
Mercury	♌ Leo	♌ Leo Vargottama
Jupiter	♏ Scorpio	♎ Libra
Venus	♋ Cancer	♒ Aquarius
Saturn	♒ Aquarius	♊ Gemini
Rahu	♎ Libra	♏ Scorpio
Ketu	♈ Aries	♉ Taurus

Each sign has nine parts of 3°20′. Counting starts from the sign itself for movable signs, from the 9th sign for fixed signs and from the 5th sign for dual signs (*Sarvartha Chintamani* 1.11). A planet whose navamsa sign is the same as its birth sign is Vargottama and counted strong (*Saravali* ch. 3).

Ashtakavarga: benefic points (bindus) in each sign

GRAHA	♈ ARI	♉ TAU	♊ GEM	♋ CAN	♌ LEO	♍ VIR	♎ LIB	♏ SCO	♐ SAG	♑ CAP	♒ AQU	♓ PIS
Sun	4	6	4	5	3	3	5	2	5	5	2	4
Moon	3	7	5	2	3	4	5	4	4	5	4	3
Mars	3	5	4	1	4	4	5	2	5	3	2	1
Mercury	4	6	6	3	5	5	6	4	5	3	2	5
Jupiter	7	5	5	4	5	6	2	5	5	6	3	3
Venus	5	5	6	4	4	4	5	5	3	3	4	4
Saturn	4	5	5	4	4	1	3	2	2	5	2	2
All seven (Sarva)	30	39	35	23	28	27	31	24	29	30	19	22

A sign with 5 or more bindus in a planet's own table is good (sobhana), 4 is middling and 0 to 3 is low (adhama) (*Prasna Marga* 32.14). A planet passing through a sign where the seven tables add to more than 28 gives good results (*Phaladeepika* 23.20). In today's transit reading, a favourable house with few bindus, or a testing house with many, cancel out (*Phaladeepika* 23.10, 26.41). Tables from *Brihat Jataka* ch. 9 and *Phaladeepika* ch. 23.

SAMPLE

SAMPLE